



Sinchnu



Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

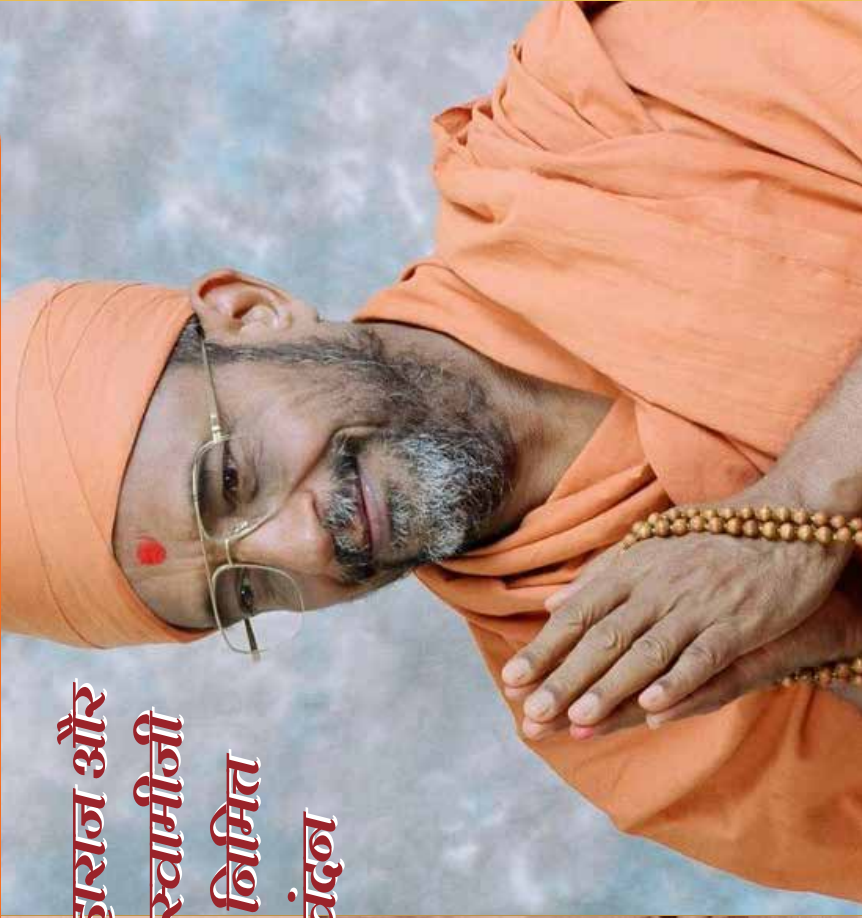
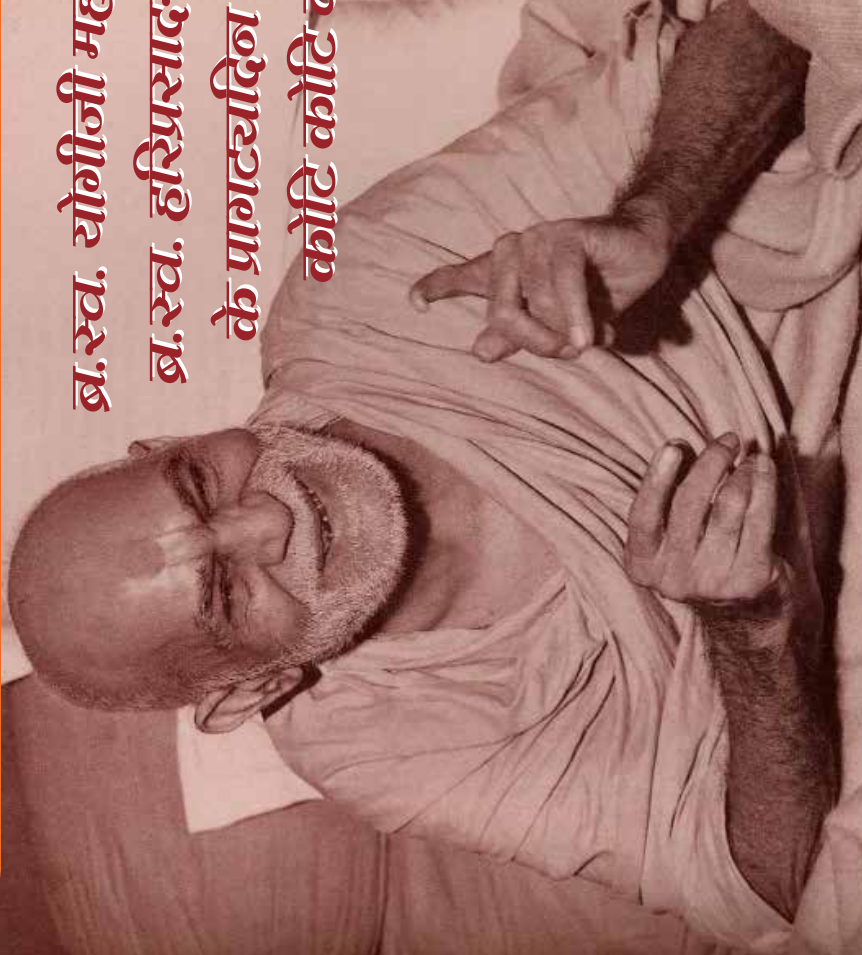
Vol. 011

Issue 05

MAY 2025

Pages 16

A.S. Rs 100



ब्र.स्व. योगीनी महाराज और
ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी
के प्रागट्यदिन निमित्त
कोटि कोटि चंदन

सत्संग समाचार

* गुरुवार, दि. १ मई को अनुपम मिशन संचालित खारघर मंदिर के १७वे पाटोत्सव निमित्त पवई की ओर से प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई तथा पू.य१ माधुरीबहन और संतबहनों तथा अन्य हरिभक्तों खारघर पधारे थे और सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई तथा अन्य साधक भाईयों को मिले और आशीर्वाद प्राप्त किये।



Kharghar Mandir Patotsav at Kharghar



* गुरुवार, दि. १ और शुक्रवार, २ मई को संभाजी नगर में प.पू. वशीभाई की हाजरी में युवाओं के लिये Orientation Program का आयोजन किया गया था। बहुत युवकों और युवतीयों को अच्छा मार्गदर्शन मिला।

* बुधवार, दि. ७ मई की भजन संध्या गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में Megarugas Hall, Chandivali में उत्साह और भक्तिभाव से हुई।



Orientation Program for Youths at Sambhaji Nagar



Bhajan Sandhya at Megarugas Hall, Chandivali

प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि जब हम प्रतिबद्धतापूर्वक कोई सेवा करते हैं तो बड़े पुरुष की दृष्टि हम पर पडती है, वैसे गुरुहरि काकाजी की दृष्टि हम पर सहज पडी। बड़े पुरुष की जब दृष्टि होती है तो वो हमारी हरपल चिंता करते हैं और हमें याद करते रहते हैं। उससे हमारी चेतना का उत्थान ज्यादा होता है। इसप्रकार हम हमारे गुरु की दृष्टि में आ जाते हैं। उससे आगे राजीपा होता है। उसके लिये गुरु की मर्जी जानकर थोडा भी कुछ करेंगे तो राजीपा मिल जाता है। छोटे से छोटा मौका भी मिले तो उसे छोडना नहीं चाहिए। हमने तो कुछ भी नहीं किया फिर भी काकाजी का सहज ही राजीपा मिल गया। उससे भी आगे प्रसन्नता होती है, जो दो प्रकार की है - **(१) सिद्धांतिक (२) प्रसन्नता**। गुणातीत स्वरूपों के सिद्धांत, नियम, उनके बताये मार्ग पर चलते हैं तब सिद्धांतिक प्रसन्नता मिलती है। वे मेरा-तेरा कभी नहीं करते, सामनेवाले को खुश रखने का ही प्रयास करते रहते हैं। ऐसी प्रसन्नता के लिये हम प्यासे हैं। काकाजीने एक ही बात रखी थी कि सभी का गुण गाओ। भगवान के भक्त का राजीपा प्राप्त करो। जितना हम निर्दोषबुद्धि, सुहृदभाव से जीवन जीयेंगे उतनी प्रसन्नता प्राप्त होगी। काकाजी कुरुक्षेत्र



Bhajan Sandhya at Megarugas Hall, Chandivali



Bhajan Sandhya at Megarugas Hall, Chandivali



में फार्मसी चलाते थे। तब कुछ हरिभक्तों को कार्य करने जोड़ दिया था। काकाजीने पत्र लिखा कि आप सभी मिलकर सुहृदभाव से जीवन जीयेंगे तो इस फार्मसी में जो भी नुकसान होगा उसकी मुझे परवा नहीं है, लेकिन सुहृदभाव नहीं रखेंगे और फार्मसी का फायदा ज्यादा कराओंगे तो वो मुझे पसंद नहीं आयेगा। ये सब बहुत सूक्ष्म बातें हैं। हम जहाँ रहते हैं, सेवा करते हैं वहाँ ऐसे सिद्धांत के मुताबिक जीवन जीने का प्रयत्न करना चाहिए। उसके लिये हररोज प्रायश्चितरूप प्रार्थना करनी चाहिए। काकाजीने ठोस सबूत के साथ सब बात बताई है। तो काकाजीने ऐसे साधनरूपी जो Techniques दिये हैं उसे हम जीवन में उतारे और उनकी सिद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त करें वही प्रार्थना।

आज की भजन संध्या में हमारे निष्ठावान और पुराने सत्संगी **Chartered Accountant** प.भ. परेशभाई परमार का भी उश्रकी अद्भुत सेवा के लिये अभिवादन किया गया था और संगीतवृंद के कई भक्तों को भी स्मृतिभेट दी गई।

✽ रविवार, दि. ११ मई को देश-विदेश के युवकों द्वारा आज की युवापेठी को भविष्य में आगे बढ़ने के लिये विशिष्ट International Youth सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें प.भ. प्रसादभाई पाटील, पू. हर्षितभाई लाड, पू. आनंदभाई, प.भ. मिलापभाई और CA प.भ. श्रुतिबहनने आध्यात्मिकता एवं आज के Modern World के बारे में अपने विचार प्रकट किये। अंत में दिल्ली से प.पू. गुरुजी, शिकागो से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।



International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai

* सोमवार, दि. १२ मई को गुरुहरि काकाजी महाराज प्रागट्यदिन (१२ जून) निमित्त विशिष्ट सभा और सत्संग का आयोजन डोंबिवली में किया था, जिसमें प.पू. भरतभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स खास पधारे थे।



Guruhari Kakaji Maharaj Pragaty Din celebration at Dombivli



* शनिवार, दि. १७ और रविवार, दि. १८ मई को कोल्हापुर में प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई, पू. हितेनभाई, पू. हर्षितभाई, पू. माधुरीबहन और पू. आरतीबहन की हाजरी में विशिष्ट महापूजा का आयोजन हुआ।





P.P. Vashibhai, P. Rajubhai and P. Ashwinbhai at Kolhapur

दि. १७ को सुंदर रथ पर ढोल-नगारों के साथ उनका स्वागत हुआ। करीब १०० हरिभक्तोंने इस महापूजा में भाग लिया। प.पू. भरतभाईने Online आशीर्वाद भी दिये। इस उपलक्ष्य में १०वी के विद्यार्थीओं को अच्छे गुण प्राप्त करने के लिये वशीभाईने विशिष्ट भेट अर्पण की।

दि. १८ को खुज गांव में सुशोभित बैलगाडी में संतभाईयों का स्वागत हुआ। वहाँ भक्तों के घर पधरामणी और सत्संग किया। उसके बाद चरण गांव में प.भ. संजयभाई (प.भ. वंदनाबहन के भाई) के वहाँ पधारे। इस विशिष्ट आयोजन में प.भ. बाबुराव-प.भ. विद्याबहन पाटील, प.भ. प्रसादभाई पाटील, प.भ. शिवाजीभाई पाटील, प.भ. तानाजीभाई पाटील, प.भ. संभाजीभाई पाटील, प.भ. शंकरभाई सावंतने भक्तिभाव से सेवा अदा की।



P.P. Vashibhai, P. Rajubhai and P. Ashwinbhai at Kolhapur and nearby villeges





P.P. Vashibhai, P. Rajubhai and P. Ashwinbhai at Kolhapur and nearby villeges

* उसी दिन योगी डिवार्डन सोसायटी, सद्भाव फाउन्डेशन और Muskan Charitable Trust के सहयोग से गुवाहाटी (आसाम) में जिन बच्चों को शारीरिक और आर्थिक समस्या हो उनके लिये मुफ्त में सारवार की व्यवस्था की गई।

* शनिवार, दि. २४ मई को ब्र.स्व. योगीजी महाराज, ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी, प.पू. महेन्द्रबापु का प्रागट्यदिन तथा पू. अरुणभाई का स्मृतिदिन 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव के साथ मनाया गया।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में पू. हर्षितभाई, पू. संदीपभाई, प.भ. हेमंतभाई मर्चन्टने योगीजी महाराज, स्वामीजी और महेन्द्रबापु के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया।



प.पू. वशीभाई ने 'आवो योगी...' भजन गाकर अपनी प्रार्थना योगीबापा के चरणों में रखी। उन्होंने कहा कि योगीजी महाराज की तपस्या का फल है कि आज पूरी दुनिया में स्वामिनारायण का सत्संग विकसित हुआ है। आज किसीको खुदका एक बेटा साधु होने के लिये देना हो तो कोई तुरंत हाँ नहीं बोलेगा, उस समय योगीबापा की आज्ञा जानकर काकाजीने पढे-लिखे युवकों को साधु के मार्ग में आगे बढने तैयार किये। काकाजी को जितना धन्यवाद दे उतना कम है कि योगीबापा की सच्ची पहचान करवाई। काकाजी की अभीप्सा और गुरुभक्ति हमारी बुद्धि के भी पर थी। थोडा-थोडा तो हम जीवन में उतारने का प्रयत्न करें। सबकुछ मिल सकता है लेकिन साधुता केवल सच्चा साधु ही दे सकता है।

महेन्द्रबापु का भी प्रागट्यदिन हम मना रहे है। उनका कथावार्ता का अंग था। विमुख प्रकरण के बाद जो परिस्थिति थी उसमें बापु और रमेशभाईने तारदेव मंदिर में सब सँभाल लिया। काकाजी के प्रति उनको बहुत प्रेम था। उस समय रहस्य की बातें काकाजी बापु और गुरुजी को कहते थे। काकाजी कहते थे - Auto suggestion. हमें दिन में बहुत विचार आते है। उसमें से ९०% नकारात्मक विचार होते है। उसे सकारात्मक करने का तरिका काकाजीने हमारे सीखाया। गुणातीतानंदस्वामीने बोला है कि भगवान के भक्त का गुण गाओ। इसलिये भरतभाईने भक्तों के गुण लिखने की आज्ञा की। तो गुणातीत भावनावाली साधुता हमारे जीवन में दृढ हो वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि योगीजी महाराजने हरेक परिस्थिति में केवल आनंद ही किया। वही हमें सीखना है, हमेशा खुश रहना है।



योगीबापाने जो सहन किया था वैसी परिस्थिति हम पर अब कभी भी नहीं आयेगी। कोई छोटा भी प्रसंग बनता है तो हमारा Mood चला जाता है। आज हमें यही संकल्प करना है कि कैसी भी परिस्थिति आये, हमें केवल गुण देखकर आनंद में रहना है। प्रमुखस्वामी महाराज कहते थे कि योगीबापा का जीवनचरित्र १०० बार पढो तो भी कम है। हमें पढने की आदत नहीं है। स्वरूपों के बारे में १० लाईन हररोज लिखनी चाहिए। सहनशीलता और गुरुभक्ति उसके अलावा योगीबापा के जीवन में कुछ भी नहीं था। सहनशीलता का मुद्दा जो 'सुनृत' में बताया है वह किसी भी शास्त्र में नहीं मिलेगा। आज हमें दो संकल्प करना है - (१) हमारा स्मित कभी भी कम नहीं होना चाहिए। कैसी भी परिस्थिति आये हमें हमेशा आनंद में रहना है। (२) गुणातीत संत के जीवनचरित्र का पठन करें। अगर कोई पुस्तक ना हो तो उनका कोई प्रसंग सुना हो वह लिखें।



महेन्द्रबापु भी हमें बहुत आनंद कराते थे। हमने उनके साथ बहुत विचरण किया है। हमें केवल गुणातीत स्वरूपों को राजी करना है। किसीने विवेकानंदस्वामी को पूछा कि हमें सत्संग बढ़ाना है तो क्या करें? उन्होंने कहा कि रामकृष्ण परमहंसदेव का जीवनचरित्र पढो। पढेंगे तो ज्ञान बढेगा। तो हम ये दो बातें जीवन में उतारे वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि योगीबापाने ५१ पढे-लिखे साधु को तैयार किया। उनको एक ही निशान था कि हर कोई साधु बने। केवल भगवे कपडे पहनना वही साधु ऐसा नहीं है, लेकिन हमारा अंतर साधु का बनना चाहिए। ऐसे संतभगवंत साहेबजी और अन्य भाईयों द्वारा नेकटाई साधु तैयार हुए। हरिप्रसादस्वामीजीने भी सभीको केवल प्यार ही दिया है। वे कईबार यहाँ शिकागो भी आये थे।

महेन्द्रबापु फकीर थे। वे जहाँ भी जाते वहाँ सभीको इकट्ठा करके काकाजी का महिमा गाते थे। उनको बहुत कुछ करना था लेकिन काकाजी की मर्जी जानकर सबकुछ छोडकर साधु के मार्ग पर आगे बढे। उन्होंने काकाजी का संदेशा हर जगह फैलाया। अरुणभाई का स्मृतिदिन भी हम मना रहे है। उन्होंने ऐसे युवकों को तैयार किया है कि आज वे सारा कार्य अच्छे से सँभाल रहे है।

तो ऐसे गुणातीत स्वरूपों का गुण हमारे अंदर आये और उनकी माला के मणका हम बन जाये वही प्रार्थना।

*** शुक्रवार, दि. २३ से रविवार, दि. २५ मई दौरान 'अक्षरधाम', स्वामिनारायण मंदिर, पवई में ५ से १६ साल की उम्र के बच्चों के लिये आनंद के साथ आध्यात्मिक मूल्यों की प्रगति हो इसलिये Online zoom app पर सुबह ११ से १ और शाम को ५ से ७ दौरान विशिष्ट बालशिविर का आयोजन हुआ था।**

देश-विदेश से कई बच्चोंने इस शिविर में भाग लिया।

प्रथम दिन संतभाईयों, संतबहनों और बालशिविर के संचालको द्वारा दीप प्रागत्य के साथ इस शिविर का आरंभ हुआ।



Bal Shibir at "Akshardham", Temple, Powai



Bal Shibir at "Akshardham", Temple, Powai



पवई की संतबहनें पू. माधुरीबहन, पू. आरतीबहन, प.भ. पूनमबहन सिंघल, प.भ. प्रीतिबहन लाड, प.भ. प्रियाबहन लाड, प.भ. जिज्ञासा वर्मा, प.भ. प्रसादभाई पाटील, पू. आनंदभाई, पू. अक्षयभाई आहिरने इस शिबिर में कई शिबिरार्थीओं को नृत्य, स्वामी की बातें, भजन, श्लोक एवम् कई सत्संग से जूडी कहानीयाँ से आनंद करवाया।

प.भ. ऋतुजाबहन कुंभकर्ण (Graphic Designer)ने Crafts, Drawing, प.भ. जागृतिबहन कानहे और प.भ. दिपालीबहन पाटीलने How to Improve focus, memory and concentration के बारे में बहुत अच्छी जानकारी दी।

बच्चों को पूजा का महत्त्व समझाने भरतभाई और वशीभाईने हररोज सुबह प्रत्यक्ष पूजा करके दिखाया।

शिबिर में बालकों को प.पू. भरतभाईने कुछ सूत्र दिये (1) **Satsang Sabha** (2) **Everyday 11 Malas** (3) कभी किसीकी चीजें उनकी परवानगी बिना लेना नहीं। (4) **Make good friends** (5) **Write 10 lines for Swaminarayan Bhagwan or Gunatit Saints.**



Bal Shibir at "Akshardham", Temple, Powai

उसी प्रकार प.पू. वशीभाई ने भी कुछ सूत्र दिये - (1) Concentration (2) Positive Attitude (3) Hard work (4) No complaints (5) Dhun.

शिविर के अंतिम दिन सुबह के सत्र में बच्चोंने बिना गेस इस्तेमाल किये chef day के रूप में पौष्टिक आहार तथा नारियल के लड्डू बनाकर सुंदर व्यंजन बनाये थे।

शिविर की पूर्णाहुति के सत्र शाम को कुछ बच्चोंने अपने घर से और अन्य बच्चोंने मंदिर में श्रीजी महाराज तथा गुणातीत स्वरूपों के भजनों गाकर नृत्य किया तथा उनके कुछ प्रसंगों को Skit Play के रूप में प्रस्तुत कर आनंद किया।

पूरे शिविर दौरान सभी आयोजकों तथा Audio/Video के युवकोंने और अन्य कार्यकर्ताओंने भक्तिभाव से सारी व्यवस्था बहुत अच्छी तरह सँभाली।

* शनिवार, दि. ३१ मई को प.पू. वशीभाई कंडला गये थे। वहाँ MESO Day celebration निमित्त उन्हें शाल अर्पण हुई और उनके मार्गदर्शन और सेवा के लिये उनका खास अभिवादन किया गया था।



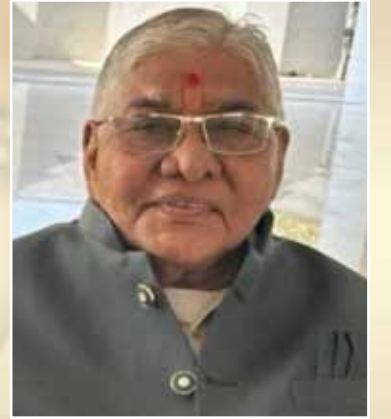
P.P. Vashibhai's felicitation at Kandla



अक्षरधामगमन

* गुर्हरि डाकाजु महाराजना जूज ज लाडीला तेम ज परम कृपापात्र, अंगत निष्ठावान सत्संगी प.ल. विनोदभाई पुरोहित (७७-८१) टूंडी मांडगी लोगवी रविवार, ता. १८मी मेना स्वधाम पधार्था.

तेओ संस्कृतमां प्रभुत्व धरापता हता अने दहिसरनी पूर्णप्रज्ञा हाईस्कूलमां संस्कृत अने हिंदी शीषवता हता. तद्उपरान्त तेओ ब्राह्मण होवाथी तेमने कर्मकांड अने विधिओनुं सारुं ज्ञान हतुं. तेथी तेओ समये-समये ते सेवा पण आपता हता. गुर्हरि डाकाजुअे तेमनी अे कणाने पिछाणी अने अपारनवार आपण। समैयाओ तथा यज्ञोमां थती वैदिक विधिओ अने महापूजाओमां संस्कृत श्लोकोना व्यवस्थित उच्यारण हेतु तेमने अचूक जोलापता. तेओ पण डाकाजु प्रत्ये जूज ज प्रीति धरापता होवाथी अचूक जधी विधिओमां आगण पडतो लाग लई डाकाजुने संतोष थाय अे प्रमाणे सर्वे विधिओ करता. तेमनी जासियत अे हती के डाकाजुनी धरिखाने ज मान आपीने डाकाजु कहे अे प्रमाणे अेटला समयमां अे विधिओ आटोपवानी होय अे मुजब ज समयनी पाजंधी रापता. आम तेओ विधिओना जड अंधनने नही, परंतु मोटापुड्ढनी धरिखाने ज प्राधान्य आपता. प.पू. गुर्जु पण अपारनवार तेमने दिल्ही जोलावी तेमना द्वारा ज सर्वे विधिओ संपन्न करापता.



डाकाजुना स्वधाम गया पछी पण तेमणे पवर्णना जधा ज संतभाईओ साथे धनिष्ठ संअंध जणव्यो हतो अने पवर्ण मंदिरना सर्वे समैया, यज्ञो के अन्य महापूजाओमां तेओ अचूक हाजर रहेता अने सहु संतभाईओने संतोष थाय अे मुजब क्रियायोगो करापता. वणी तेओनुं जूवन जूज ज शिस्तताभर्युं अने व्यवस्थित हतुं. क्यारे पण तेओअे पोतानी विधा के ज्ञाननो रंयमात्र आडंजर के देजाव राण्यो नहतो. तेमनां पत्नी प.ल. हेमलताअहेन पण जूज ज सेवाभावी छे अने आपण। घण। समैयाओमां तेमणे घणी जधी सेवाओ अहोहोभावे

અને નિષ્ઠાપૂર્વક સહુને સંતોષ થાય એ રીતે બજાવી છે. તેમના દીકરી પ.ભ. દક્ષાબહેનને પણ પવર્ધ મંડળ પ્રત્યે ખૂબ જ ભાવ છે. વિનોદભાઈએ આર્થિક રીતે પણ પવર્ધ મંદિર માટે ખૂબ જ સહકાર આપ્યો હતો, તેમ જ મંદિરના નૂતન Project માટે તેમણે નક્કી કરેલ સેવા તેમણે અગાઉથી જ આપી દીધી હતી કારણ કે તેમની તબિયત નાદુરસ્ત હોવાથી તેમાં તેમણે વિલંબ કર્યો નહતો.

તેમની અંતિમ વિધિમાં પ.પૂ ભરતભાઈ અને હરિભક્તો તથા પૂ માધુરીબહેન તથા અન્ય બહેનો ખાસ પધાર્યા હતા અને એમને ભાવાંજલિ અર્પણ કરી હતી. તેમના ભાઈ અનુપમભાઈ તો વર્ષોથી આપણા સમાજ સાથે ઘનિષ્ઠતાથી સંકળાયેલા છે. તેમની સ્મૃતિમાં તા. ૧૯ થા તા. ૨૧ મે સુધી સત્સંગીજીવનની પારાયણ રાખવામાં આવી હતી, જેમાં પવર્ધનાં સંતબહેનો તથા તેમના સર્વે કુટુંબી અને સ્વજનોએ તેમાં ભાગ લીધો હતો અને તેમના ગુણોને યાદ કરી સ્મૃતિ કરી હતી. તા. ૩૦ મેના દહીસર ખાતે તેમની પ્રાર્થના સભા રાખવામાં આવી હતી. જેમાં પવર્ધના સંતભાઈઓ તથા સંતબહેનોએ ખાસ ભાગ લીધો હતો. તા. ૨૨ જૂને પવર્ધ મંદિરે તેમની સ્મૃતિમાં વિશિષ્ટ મહાપૂજા કરવામાં આવી હતી.

વિનોદભાઈ તો અક્ષરધામમાં જ હતા અને છે. આપણે સહુ તેમના કુટુંબીજનોને બળ મળે અને તેમના જેવી નિષ્ઠા, સેવા, વિનમ્રતા. નિયમિતતા અને સમર્પણ જેવા ગુણો આપણી અંદર પણ આવે તે માટે ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને પ્રાર્થના.

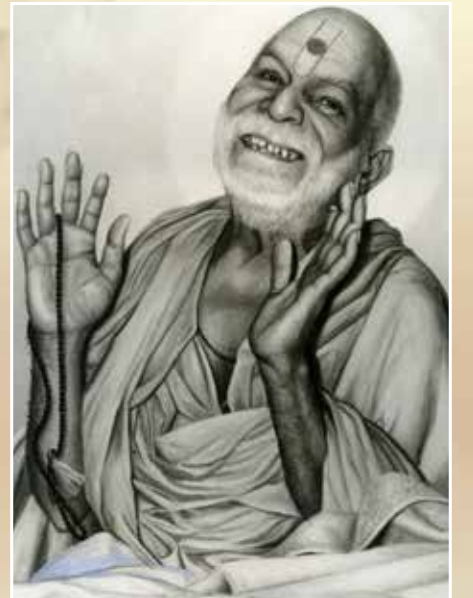


॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

મહાજનો યેન ગતઃ સ પન્થા:...

શુક્રવાર, તા. ૨૩મી મે એ ગુણાતીત સમાજ માટે જ નહીં, સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય માટે પણ નહીં, પરંતુ સમગ્ર માનવજાત માટે અને વિશેષ તો અલખના માર્ગે ચાલતા સહુ કોઈ યાત્રીઓ માટે ખૂબ જ મંગલકારી અને ભાગ્યશાળી દિવસ છે. કારણ મૂળ અક્ષરબ્રહ્મ સદ્ગુરુ ગુણાતીતાનંદસ્વામીના અવતાર સમા બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ અને તેમની અંતરની સિદ્ધાંતિક પ્રસન્નતા પામીને તેમના તદ્દતભાવને પામી ગયેલ તેમના જ આધ્યાત્મિક વારસદાર બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીનો પણ આજ દિવસે પ્રાગટ્યદિન છે. અત્યારસુધીના આધ્યાત્મિક ઇતિહાસમાં આવો સુખદ અને મંગલકારી યોગાનુયોગ ક્યારેય આવ્યો નથી. એ આપણા સહુ માટે તો એક સુખદ અવસર ગણો કે ભગવાન સ્વામિનારાયણનો દિવ્ય સંકેત ગણો, પરંતુ આવો દિવસ હવે પછીના આધ્યાત્મિક ઇતિહાસમાં ફરીથી આવશે કે નહીં એ વાત પણ એટલી જ સત્ય અને આશ્ચર્યજનક છે!

બન્ને ગુણાતીત પુરૂષો – યોગીજી મહારાજ ૧૮૯૨માં અને સ્વામીજી ૧૯૩૪માં આ ઘરા પર પ્રગટ થયા અને વધુ સુખદ આશ્ચર્ય એ હતું કે સ્વામીજી યોગીબાપાના સંપર્કમાં આવ્યા અને એમના થકી એ ગુણાતીત પેઢીના પોતે પણ અનુપમ વારસદાર બન્યા. તેમ જ આપણને એ બન્ને યુગપુરૂષોને ખૂબ જ નજીકથી નિહાળવાનો અને તેમના સમાગમનો અદ્ભુત લાભ મળ્યો એ આપણાં પરમ સૌભાગ્યની આપણે શું કલ્પના કરી શકીશું? યોગીજી મહારાજે ઘરતી પર આવી એટલી બધી જ્ઞાનગરીબી ધારણ કરી હતી કે કોઈપણ વ્યક્તિ એમના



સંપર્કમાં આવે તો બાહ્ય રીતે તો એ સાવ ભલાભોળા સામાન્ય સાધુ જ લાગે. આજથી લગભગ સવાસો વર્ષ પહેલાં અમરેલી જિલ્લાના ધારી જેવા નાનકડાં ગામડાંમાં તેમનું પ્રાગટ્ય થયું. લૌકિક દષ્ટિએ પણ એમનો અભ્યાસ ખૂબ જ ઓછો હતો. અંગ્રેજીની તો બિલકુલ ફાવટ નહીં, સંસ્કૃતનો કોઈ અભ્યાસ નહીં, કોઈને આંજી દે એવી કોઈ વિદ્વતા કે વાકુઈટા પણ નહીં. ગમે એવો માણસ હોય પણ એમને માટે સામાન્ય સાધુ માનવાની ફૂચેષ્ટા કરી જ લે, એ કક્ષાએ તેમણે પોતાની અસલી પ્રભુતા સાધુતાના અંચળા હેઠળ છૂપાવી દીધી હતી. એમના ગુરૂવર્ય બ્ર.સ્વ. શાસ્ત્રીજી મહારાજે કેટલીયવાર સ્પષ્ટ નિર્દેશ કર્યો હતો કે **‘મારામાં ને યોગીમાં એક રોમનોય ફરક નથી’** અથવા **‘હું તે જોગી ને જોગી તે હું’** અથવા **‘વ્યાસજીથી ભાગવતમાં સાધુના કોઈ ગુણ લખવાના રહી ગયા હશે તો આ યોગી પૂરા કરી આપશે.’** આવા કેટલાય સ્પષ્ટ સંકેત આપવા છતાંય યોગીજી મહારાજે તેમનું વ્યક્તિત્વ જ એવું રાખ્યું હતું કે કોઈપણ વ્યક્તિ ભૂલભૂલામણીમાં આવી જ જાય.

આપણાં સહુનાં અતિ મોટાં ભાગ્ય હતાં કે **ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજે** આપણને સહુને યોગીબાપાની ગુણાતીત પુરૂષ તરીકેની ઓળખાણ કરાવી. એટલું જ નહીં પરંતુ એમને કેવી રીતે સેવવા અને એમનો સમાગમ કેવી રીતે કરવો એ રહસ્ય આપણી સમક્ષ છતું કર્યું. તેમણે સ્વયં જીવન જીવીને આપણને એ બતાવ્યું. યોગીજી મહારાજ જેવા ગુણાતીત પુરૂષ પાસે કાકાજીએ પોતાની ઉજ્જવળ કારકિર્દી, અત્યંત તેજસ્વી, પ્રભાવશાળી પ્રતિભા, સહુ કોઈને આંજી દે એવું અંગ્રેજી અને ગુજરાતી ભાષા પરનું પ્રભુત્વ, વ્યાવહારિક સૂઝ અને ફૂનેહ અને એવાં તો કેટલાંય એમનાં વ્યક્તિત્વનાં ઉજ્જવળ પાસાંઓ યોગીબાપા પાસે તદ્દન વિલિન કરી નાંખી એક અદના સેવક તરીકે તેમણે જે વર્તન કર્યું તેના પરથી જ આપણને સહુને ખ્યાલ આવે કે કાકાજી જેવી વિરલ વિભૂતિ જે યોગીજી મહારાજ પાસે સેવક થઈને વર્તતી હોય તો યોગીજી મહારાજ કેવા પુરૂષ હશે! કેવળ કાકાજી જ નહીં પરંતુ ગુરૂહરિ પપ્પાજી, બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી, સંતભગવંત સાહેબજી, બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજી, પ.પૂ. હરિભાઈસાહેબ, બ્ર.સ્વ. પ્રમુખસ્વામીજી, બ્ર.સ્વ. મહંતસ્વામીજી, પ.પૂ.ડૉક્ટરસ્વામીજી અને અનેક વિદ્વાનો તથા મહાનુભાવો અને તરવરિયા યુવાનો એ પુરૂષના પ્રેમમાં ઓળઘોળ થઈને તેમના અલ્પ વચને જીવન કુરબાન કરવા તત્પર થતા હોય તો એવા યોગીજી મહારાજની આપણે શું કલ્પના કરી શકીએ!

આમ તો યોગીજી મહારાજના જીવનનાં અનેક પાસાંઓ છે અને સ્વામીજી કહેતા એમ એમણે દરેક ગુણને એની ઉચ્ચતમ કક્ષાએ જઈને દર્શન કરાવ્યું છે. છતાં એમની સહનશીલતા અને સાધુતાના અદ્ભુત પ્રસંગોનો અછડતો નિર્દેશ કરીને આપણે એમના જીવન પ્રત્યે કંઈક દષ્ટિપાત કરીએ.

યોગીજી મહારાજે સેવા ધર્મને જ જીવનમાં પ્રાધાન્ય આપ્યું હતું. એ એટલી હદ સુધી કે એક વખત ટ્રેનની મુસાફરી દરમ્યાન એક બિનસત્સંગીએ તેમને પૂછ્યું કે ‘આટલા બધા લોકો તમને માને છે અને પૂજે છે તો એવી મોટપ તમારામાં કંઈ રીતે આવી?’ ત્યારે યોગીજી મહારાજે એક પળનોય વિલંબ કર્યા વગર કહ્યું કે ‘વાસણ ઉટકવાથી (માંજવાથી)!’ સામાન્ય રીતે જોઈએ તો વાસણ ઘસવાની નીચી ટેલની સેવા અને આઘ્યાત્મિકતાના ગુરૂશિખર સમ બ્રહ્મસ્વરૂપની સ્થિતિ એ બન્નેનો કોઈપણ જાતનો મેળ બેસે નહીં. પરંતુ યોગીબાપાએ કંઈ રીતે એ સેવાને તેની ઉચ્ચ કક્ષા સુધી પહોંચાડી એ આપણા સહુ માટે એક પ્રેરણાદાયી અને જીવનમાં ઉતારવા જેવું દષ્ટાંત છે.

આટલાં બધાં વર્ષો પછી, આઘ્યાત્મિક ક્ષેત્રે ઘણી બધી શોધખોળો થયા પછી પણ આ વાસણ માંજવાની સેવાથી કેવી રીતે બ્રાહ્મીસ્થિતિની મોટપ પામી શકાય એ આજે પણ એટલું જ જીવંત અને આશ્ચર્યજનક છે. એ વાત એમના જીવન પરથી તાદૃશ થાય છે! યોગીબાપાએ પોતે ૧૬ વર્ષના હતા અને સાધુ થઈને જૂનાગઢ મંદિરે જે સેવાયજ્ઞની આહ્લેક જગાડી હતી તે લગભગ પાંચ દાયકા સુધી એવીને એવી જીવંત અને જવલંત રાખી હતી. અનેક પ્રકારનો શારીરિક ભીડો તેમણે જે વેઠ્યો છે તે માટે શબ્દો અને પૃષ્ઠો ઓછાં પડે એમ કહેવામાં કોઈ જ અતિશયોક્તિ નથી. પોતે તો એટલો બધો શારીરિક ભીડો વેઠ્યો જ, પરંતુ એમણે સ્વીકારેલી સેવાની એવી પરિસ્થિતિમાં પણ બહારની વ્યક્તિઓ જેમ કે એમના ગુરૂ પૂ. વિજ્ઞાનસ્વામીજી જે હકદાવા કરતા, ગુજરાત-

સૌરાષ્ટ્રના દરબારો કે સાથે રહેનારા સાધુઓ અને કેટલાય મહાનુભાવોની સેવા-સરભરા એ બધાના અપ્રતીમ ભીડાનું જો આપણે વર્ણન કરવા બેસીએ તો એનો અંત જ આવે એમ નથી.

અક્ષરપુરુષોત્તમ સંસ્થાના ખૂબ જ વિદ્વાન એવા સંતવર્ય પૂ. ઈશ્વરચરણસ્વામીજીના શબ્દોમાં કહીએ તો **‘માનવજાતે આજસુધી થયેલાં કષ્ટો, તિરસ્કારો અને વેદનાના સમૂહને એકીસાથે આ પુરૂષે વેઠવાનાં આવે તો પણ એમના પ્રસન્ન હાસ્યની લાલીમા ભૂંસાવી અશક્ય હતી...’** એ કક્ષાએ જઈ સહુનું સહન કર્યું હતું. એમના ગુરૂ વિજ્ઞાનસ્વામીજી તો દુર્વાસા ઋષિના જાણે અવતાર હોય એમ એમને અકલ્પ્ય ભીડો, તિરસ્કાર, અપમાન અને શારીરિક મારની યાતનાઓ એક-બે દિવસ નહીં, પરંતુ ૨૦ વર્ષ સુધી એકધારી રીતે કરી, એમણે યોગીજી મહારાજ ઉપર અત્યાચાર કર્યો હતો. આ બધા જ પ્રસંગો આપણે સહુ જાણીએ છીએ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીના શબ્દો પ્રમાણે કહીએ તો

(૧) ૬૦ વર્ષ સુધી યોગીજી મહારાજે ઘી અને તેલ જોયું નથી. કારણ એમના ગુરૂ શાસ્ત્રીજી મહારાજે સ્વયં અતિ સમર્થ હોવા છતાંય જે રીતે વ્યાવહારિક દેશકાળ સ્વીકાર્યા હતા તેમાં સારું ઘી-તેલવાળું ભોજન તો ઠીક પણ સારી શાકભાજી લાવી શકવાની પરિસ્થિતિ નહતી.

(૨) ૬૦ વર્ષ સુધી બહાર મૂકેલાં માટલાંનાં પાણીથી ન્હાયા છે.

(૩) ૪૦ વર્ષ સુધી ગમાણમાં સૂતા અને કોથળાંનું આસન જ એમની કહેવાતી પથારી હતી. હાથનું ઓશિફું અને પોતાનું ગાતકિયું ઓઢવાનું અને તે પણ પગ લાંબા કરીને સૂવા મળે નહીં એવી પરિસ્થિતિમાં તેઓ રહ્યા હતા.

(૪) વળી વર્ષમાં ૧૦૦ ઉપવાસ કરવાના, દર ત્રીજે દિવસે બપોરે એક વખત જમવાનું અને કોઈપણ મીઠાઈ કે ફરસાણ તો હોય જ નહીં. ભૂલેચૂકે એમની પાસે આવી હોય તો પણ સામેથી આગ્રહ કરી હરિભક્તોને જમાડી દેતા. કેટલીય વાર તો જમવા બેઠા હોય તે જ વખતે નજીવા કારણસર એમનો વાંક કાઢી વિજ્ઞાનસ્વામીજી એમને ઊભા કરી દેતા અને ઉપવાસ આપી દેતા. આ બધું જ યોગીબાપાએ હસતાં મોઢે ખૂબ જ આનંદથી, કોઈપણ જાતનો બચાવ કર્યા વગર સ્વીકારી લીધું હતું. તે એટલે સુધી કે જ્યારે કોઈ વિજ્ઞાનસ્વામીજીનાં આવાં વર્તન માટે યોગીબાપાને કહેતું તો તરત જ તેની વાતને વચ્ચેથી કાપી એમ કહેતા કે ‘વિજ્ઞાનસ્વામી હતા તો મને શાસ્ત્રીજી મહારાજનો જોગ થયો અને તેઓ હતા તો હું આટલે સુધી પહોંચ્યો.’ આમ જરાપણ તેમને માટેની ટકોર તેઓ ન ચલાવતા.

બીજી બાજુ પ્રભુદાસભાઈ (હરિપ્રસાદસ્વામીજી)નું જીવન પણ ખૂબ જ અદ્ભુત છે. યોગીબાપાના જોગમાં આવ્યા ત્યારથી તેમણે યોગીજી મહારાજનાં વચન અને અનુવૃત્તિને જ પોતાનું જીવન બનાવી દીધું હતું. યોગીબાપા જે કંઈપણ કસોટી કરે તથા શારીરિક કે માનસિક રીતે પણ ભીડો આપે તો એને પોતાનું પરમ સૌભાગ્ય માની હોંશેહોંશે સ્વીકારી લે, પરંતુ ક્યારેય પોતાનો બચાવ ન કરે, પોતાની સગવડ ન જુએ કે યોગીબાપા તરફ એક સેકંડ પૂરતો પણ ભાવફેર કે અરુચિ ન રાખે. યોગીબાપા સાથેના એમના પૂર્વાશ્રમના ૧૦ વર્ષના ઈતિહાસમાં તેઓ દરરોજ રાત્રે લગભગ દોઢ પછી જ સૂવે અને કોઈપણ ભોગે સવારે સાડાચાર વાગે તો દેરીએ પહોંચી જ જાય. નાહીને પૂજા કરી



અઢીસોથી ત્રણસો પ્રદક્ષિણા કરે અને સાડાપાંચ વાગે બાપાની રૂમમાં પહોંચી જાય અને પછી એમની કેડ દાબે. યોગીબાપાએ ગેંસની તકલીફ ગ્રહણ કરી હતી તેથી પ્રભુદાસભાઈ વ્યવસ્થિત રીતે તેમની કેડ પકડે અને ગેંસ છૂટો થાય અને યોગીબાપાને તકલીફમાં થોડી રાહત થાય. એ ઉપરાંત આખા દિવસ દરમ્યાન લગભગ ૧૭ કિપાર્ટમેન્ટ તેઓ સંભાળતા. આવો પ્રોગ્રામ રોજ જ હતો. બપોરે તો ત્રણ વાગે પ્રભુદાસભાઈને જરાક આરામનો સમય મળે અને ૧૫-૨૦ મિનિટમાં જ ઊઠી સાડાત્રણ વાગે તો યોગીબાપા પાસે ટપાલની સેવામાં પહોંચી જ ગયા હોય. એમાં ઘણી વખત તો યોગીબાપા પોતે જ કહે કે ‘તમારે બપોરે સૂવાનું નહીં, મોટાસ્વામીને પંજો નાંખો અથવા વચનામૃત કે સ્વામીની વાતો પાકી કરો.’ આમ એકધારા સતત ભીડામાં યોગીબાપાએ પ્રભુદાસભાઈને રાખ્યા હતા.

પ્રભુદાસભાઈ યોગીબાપાની સેવામાં હતા. તે દરમ્યાન યોગીબાપાએ એમને સાધુના જ નિયમો આપ્યા હતા અને એમને કહેલું કે ‘તમે કોઈ ડોશી (સ્ત્રી)ને અડી જાઓ તો ઉપવાસ કરવો.’ વર્ષમાં ૧૦૦ ઉપવાસ કરાવડાવે. દર ત્રીજે દિવસે ચાંદલો ચોટેલો જ હોય, વળી એમણે યોગીબાપા સાથે બધી ગાડીઓમાં ફરવાનું, યોગીબાપાનો સામાન અને બધી વ્યવસ્થા કરવાની, સંતોને સાચવવાના અને સંતો સાથે ફરવાનું, વળી તે સમયમાં આજના જેવો સમજૂ અને મહિમાવાળો વ્યવસ્થિત સમાજ નહતો તેથી સાંપ્રદાયિક મર્યાદાનો ખ્યાલ મોટા ભાગના સમાજને ન હોય તેથી પ્રભુદાસભાઈ સંતોને સ્ત્રી અડી ન જાય તે માટે ખૂબ જ ધ્યાન રાખતા અને એમને ભલે સ્ત્રી અડી જાય પણ સંતોને તો ન જ અડવા દે. એટલે એમને તો ઉપવાસ અનાયાસે પણ કરવો જ પડે.

એક વખત નાવડા ગામમાં પારાયણ હતી. પારાયણ પૂર્ણ થતાં પહેલાં પ્રભુદાસભાઈ દૂર બેઠા હતા. તે વખતે એક ૮-૧૦ વર્ષની છોકરી પ્રભુદાસભાઈના આસન પરથી પસાર થઈ. તેમને અડેલી નહીં અને એમને એ વાતનો ખ્યાલ પણ નહતો. પછી પારાયણ પૂરું થયું અને સભામાંથી બહાર જતા યોગીજી મહારાજે એમનો હાથ પકડ્યો. પ્રભુદાસભાઈ તો મનમાં વિચાર કરતાં હતા કે આજે ભૂખ ખૂબ લાગી છે તો વ્યવસ્થિત જમી લેવું છે. ત્યાં જ યોગીબાપાએ કહ્યું કે ‘ગુરૂ, આજે ઉપવાસ કરો.’ પછી કહે કે ‘તમે પાછળ બેઠા હતા ત્યારે એક નાની બેબી તમારા આસન પરથી પસાર થઈ એટલે તમારે ઉપવાસ કરવો પડે.’ પ્રભુદાસભાઈએ યોગીબાપાને પૂછ્યું નહીં કે ‘કેમ?’ એમણે યોગીબાપાની આજ્ઞા મુજબ ઉપવાસ કરી લીધો.

એ પછી બપોરે પંખો નાખતા પ્રભુદાસભાઈ સહેજ હસ્યા એટલે યોગીબાપાએ પૂછ્યું કે ‘કેમ હસો છો?’ ત્યારે પ્રભુદાસભાઈએ કહ્યું કે ‘તમે અમારું બહુ ધ્યાન રાખો છો એટલે સહેજ હસવું આવ્યું.’ પછી યોગીબાપાએ કહ્યું કે ‘પોતાના હોય એનું તો ધ્યાન રાખવું પડે.’ પછી કહે કે ‘હું તમારું ધ્યાન એટલા માટે રાખું છું કે આ જે દેહ પોતાનો મનાઈ ગયો છે તે પ્રભુનો થઈ જાય એવો સંકલ્પ છે.’ આ સાંભળી પ્રભુદાસભાઈની આંખમાં આંસુ આવી ગયાં. આ કક્ષાએ એમણે યોગીબાપા સાથે અપ્રતીમ પ્રીતિ અને દાસત્વ રાખ્યું હતું. ગમે ત્યારે યોગીબાપા તેમને ગમે તેવી અશક્ય લાગતી સેવા પણ ચિંદી શકતા. પ્રભુદાસભાઈ પણ અહોહોભાવે ‘હું કોની સેવા કરું છું’ એવા કેફથી શારીરિક તકલીફને જરાપણ ગણ્યા વગર યોગીબાપા રાજી થાય એ રીતે એ સેવાઓ કરતાં.

યોગીજી મહારાજ અને સ્વામીજી, આ બન્ને પુરૂષો જે જીવન જીવી ગયા છે તેનું ચથાતથ વર્ણન તો અશક્ય જ છે. તેમણે જે ગુરૂભક્તિ, ભીડાભક્તિ, પરાભક્તિ કરી છે તે આપણી કલ્પનામાં આવે એમ છે જ નહીં. ગુણાતીત પુરૂષો સિવાય કોઈ એને સમજી શકે પણ નહીં અને એ પ્રમાણે વર્તી પણ નહીં શકે. છતાં સ્વામીજી એવું કહેતા કે ‘ગુણાતીત પુરૂષો ક્યારેય પણ માનવ મર્યાદાની બહાર વર્તતા નથી.’ તો આપણે વિચાર કરીએ કે ભગવાન સ્વામિનારાયણથી લઈને આજસુધીના સર્વે ગુણાતીત પુરૂષોએ જે તપ કર્યું છે, ચાતનાઓ સહન કરી છે, ભીડો ખમ્યા છે, તદ્દન પ્રતિકૂળ સંજોગોમાં-શારીરિક, આર્થિક, સાધનનો અભાવ હોવા છતાં સામાજિક વગેરે ઘણી તકલીફોમાં પણ એમણે જે કાર્ય કર્યું છે તેનો અંદાજ આપણને આવી શકે એમ નથી. જેમ નિગમ પણ ભગવાનના મહિમાને ‘નેતિ નેતિ’ કહે છે તેમ ગુણાતીત પુરૂષોએ સહન કરેલા ભીડાને પણ ‘નેતિ નેતિ’ જ કહી શકાય એ કક્ષાએ એમણે સહન કરી આપણી માટે એક આદર્શ બતાવ્યો છે.

અત્યારે તો ખૂબ જ સાનુકૂળ સંજોગો છે. પહેલાં જેવી આર્થિક કે સાધનોની તકલીફ પણ નથી અને સમાજ પણ બધી જ રીતે ખૂબ આગળ વધી ગયો છે. તો સાવ નજીવી બાબતમાં આપણને કંઈક શારીરિક અથવા માનસિક તકલીફ લાગે ત્યારે મોટાપુરૂષોના આવા પ્રસંગોની સ્મૃતિ કરીએ તો તરત જ પાછા વળવાનું ખૂબ બળ મળે અને આપણે બધી પ્રકારનાં નકારાત્મક વલણમાંથી બહાર આવી સુખે-સુખે આપણી આધ્યાત્મિક યાત્રા આગળ વધારી શકીએ. તો આજના મંગલકારી દિને આવું જીવન ચત્કિચિત્ જીવવા માટે શ્રીજી મહારાજ, ગુણાતીતાનંદસ્વામી, શાસ્ત્રીજી મહારાજ, યોગીજી મહારાજ, કાકાજી મહારાજ, પપ્પાજી મહારાજ, સ્વામીજી, સાહેબજી અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોનાં ચરણોમાં પ્રાર્થના.

चातुर्मास के नियम

रविवार, दि. 06 जुलाई, 2025 को नियमी एकादशी से चातुर्मास पर्व का प्रारंभ हो रहा है। तो हम सभी भगवान स्वामिनारायण और गुणातीत संतों की प्रसन्नता हेतु निम्नलिखित नियमों में से पाँच नियमों का पालन करने का संकल्प करें।

1. नित्य वचनामृत ग्रंथ और स्वामी की बातों का पठन करें या श्रवण करें एवं शिक्षापत्री का दो श्लोक मुखपाठ करें।
2. गुरुहरि काकाजी महाराज का जीवनचरित्र 'अहो! गाथा गुणातीत विभुनी...' का नित्य पठन करें।
3. रोज 40 मिनट 'स्वामिनारायण महामंत्र' का अजपाजप (श्वासोश्वास के साथ मंत्र जाप) करते हुए तेज वॉर्किंग करें।
4. दो भगवदी (बहनों के लिए बहनों और भाईयों के लिए भाईयों) और चार हरिभक्तों के साथ आत्मीयता बढ़ायें। कोई भी पांच हरिभक्तों को व्यक्तिगतरूप से मिलने जाये या टेलीफोन द्वारा हररोज संपर्क करके सत्संग का महिमागान करें।
5. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवायें / पवई मंदिर के नये Project की सेवा के लिये Coupon Book द्वारा सेवा प्राप्त करने के लिये विचरण करें।
6. नित्य प्राणायाम का अभ्यास योग शिक्षक की सलाह अनुसार 30 मिनट अवश्य करें।
7. अपने एक या दो साथी मुक्तों का एक गुण विस्तृत रूप से नित्य अवश्य लिखें। (पति-पत्नी जरूर लिखें।)
8. घर में पकाया ही खाना खाये, बाहर से ना मंगाये।
9. गुणातीत स्वरूपों की सेहत अच्छी रहे और पवई मंदिर के नये Project का कार्य सरलता से आगे बढ़े उसके लिये हररोज सवा घंटा धुन अवश्य करें।
10. हरेक क्रिया में स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते रहे, प्रभु का स्मरण करते रहे।

अन्य विशिष्ट नियमों (खास बालकों के लिये)

11. कम से कम दो मित्रों को बालसभा में आने के लिये कहें।
12. मोबाईल का त्याग करें। (मोबाईल का उपयोग केवल बात करने के लिये ही करें। लेकिन सोशियल मिडिया, युट्यूब, गेम जैसे अन्य कार्यक्रमों के लिये न करें।

Summary of Events

(1) Visit by Saint Brothers and Sisters at 17th Patotsav of Kharghar Temple (Anoopam Mission) on 1st May. (2) Visit by P.P. Vashibhai at Sambhaji Nagar for Orientation Program for Youths on 1st and 2nd May. (3) Bhajan Sandhya on 7th May at Megarugas Hall-Chandivali. (4) Visit by P.P. Bharatbhai and P. Kishorebhai Masters at Dombivali for Guruhari Kakaji Maharaj's Pragatyadin celebration on 12th May. (5) Visit by P.P. Vashibhai, P. Rajubhai and Saint Brothers at Kolhapur on 17th and 18th May. (6) Sadbhav Foundation, Rotary club and Muskan Charitable Trust sponsored free surgeries for underprivileged children with physical deformities at Guvahati on 18th May. (7) B.S. Yogiji Maharaj, B.S. Hariprasadswamiji and P.P. Mahendra Babu's Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 24th May. (8) Online Children's Camp at "Akshardham" Temple, Powai from 23rd to 25th May. (9) Felicitation of P.P. Vashibhai by Directors and Employees of MESO Company at Kandla on 31st May. (10) Akshardhamgaman of P.B. Vinodbhai Purohit on 18th May. (11) Article for B.S. Yogiji Maharaj and B.S. Hariprasadswamiji on their Pragaty Din on 23rd May.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From



YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonawala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta